eISBN: 978-81-686924-4-2

CHAPTER-41

भारतीय भाषाओंकाअंतर्संबंध और राष्ट्रीय एकात्मता: एक भाषावैज्ञानिक अनुशीलन

Interrelationship of Indian languages and national integration: a linguistic study

Dr. Ekta
A.V. College of Arts,
Science & Commerce (Autonomous), Osmania University,
ektachawhan@gmail.com
https://doi.org/10.66483/jsp.2026.001.ch41

भारत कीभाषाई पहचान कोवैश्विक स्तर पर अक्सर 'अनेकता' केचश्मेसेदेखाजाताहै, जहाँभारोपीय, द्रविड़, आग्नेय और तिब्बती-बर्मीजैसेअलग-अलग भाषापरिवारोंकोपृथक और स्वतंत्र इकाइयोंकेरूप मेंप्रस्तुत कियागयाहै। किंतु, यह शोध-पत्र इस औपनिवेशिक और विभाजनकारीदृष्टिकोण सेपरेएक 'नवीन दृष्टि' काप्रतिपादन करताहै, जोभारतीय भाषाओंकोखंडोंमेंदेखनेकेबजाय उनकी'अंतःप्रवाहीपारस्परिकता' और 'भाषिक एकात्मता' पर केंद्रित है। हज़ारोंवर्षोंकेनिरंतर सामाजिक-सांस्कृतिक सह-अस्तित्व, साझाइतिहास और भौगोलिक निकटतानेइन भिन्न मूल कीभाषाओंकेबीच एक ऐसी'संज्ञानात्मक एकता' कानिर्माण कियाहै, जिसेभाषाविज्ञान कीशब्दावलीमें'एरियल डिफ्यूज़न' (Areal Diffusion) या'भाषाई संकुल' कहाजाताहै। यह शोध स्थापित करताहैकिचाहेवह उत्तर भारत कीसंस्कृतनिष्ठ भाषाएँहोंयादक्षिण कीप्राचीन द्रविड़भाषाएँ, इनकेबीच व्याकरणिक संरचना(SOV पद-क्रम), वैज्ञानिक वर्णमालाऔर साझा'तत्सम' शब्दावलीकाएक ऐसाअदृश्य सेतुविद्यमान है, जोसिद्ध करताहैकिभारतीय जनमानस केसोचनेऔर अभिव्यक्तिकीपद्धतिमूलतःएक हीहै। यह प्रस्तावनाइस विचार कोआधार देतीहैकिभारत कीभाषाई विविधताहमारेविखंडन काकारण नहीं, बल्किहमारीउस सांस्कृतिक सघनताकाप्रमाण है, जिसनेसाहित्य, भक्तिआंदोलन और आधुनिक संचार माध्यमोंकेसहयोग सेएक 'अखंड भारतीय भाषिक चेतना' कोजीवित रखाहै। भारतीय भाषाएँमहज़संवाद कामाध्यम नहीं, बल्किहमारीहज़ारोंसाल कीसभ्यताकाजीवित दस्तावेज़हैं। "भारत कीसभीभाषाएँहमारीअपनीभाषाएँहैं, वेएक हीभारतीय चेतनाकीविविध अभिव्यक्तियाँहैं।" इस भाव कोचरितार्थकरतीयेपंक्तियाँशोध कीआधारभूमितैयार करतीहैं: "भाषाकीदीवारेंतोबस नक़्शोंकीलकीरेंहैं, वरनादिल कीधड़कन तोहर ज़बांमेंएक है। अक्षर अलग हैं, लिपियाँजुदाहैंतोक्या, ममता, करुणाऔर प्रार्थनाकीगूँज हर जगह एक है।"

1 भारतीय भाषापरिवार: एक नवीन दृष्टिऔर सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

पारंपरिक भाषाविज्ञान नेलंबेसमय तक भारतीय भाषाओंकोभारोपीय (Indo-Aryan) और द्रविड़(Dravidian) जैसेकठोर खानोंमेंविभाजित करकेदेखाहै, जोअक्सर औपनिवेशिक हितोंसेप्रेरित एक 'फूट डालोऔर राज करो' कीवैचारिक पद्धतिकाहिस्सारहा। परंतु, यह शोध पत्र एक ऐसी'नवीन दृष्टि' काप्रतिपादन करताहैजोभाषाओंकोपृथक द्वीपोंकेरूप मेंदेखनेकेस्थान पर उन्हेंएक अंतःप्रवाहीऔर परस्पर संवादरत 'भाषाई संकुल' (Linguistic Area) केरूप मेंस्वीकार करताहै। ऐतिहासिक और समाज-भाषाई दृष्टिसेदेखेंतोभारत काभूगोल हज़ारोंवर्षोंसेएक ऐसीप्रयोगशालारहाहैजहाँविभिन्न मूल कीभाषाओंनेएक-दूसरेकेसाथ न केवल सह-अस्तित्व बनाए रखा, बल्किएक-

दूसरेकेव्याकरण, ध्वनियोंऔर मुहावरोंकोइतनीगहराई सेआत्मसात कियाकिआज उनकेबीच कीविभाजक रेखाएँधुंधलीपड़गई हैं। भाषाविद्एम.बी. एमिनो(M.B. Emeneau) नेभारत कोएक 'भाषाई क्षेत्र' (Linguistic Area) केरूप मेंपरिभाषित कियाथा, जिसकाअर्थहैकियहाँकीभाषाओंनेआनुवंशिक रूप सेभिन्न होनेकेबावजूद संपर्कऔर संवाद केकारण समान संरचनात्मक विशेषताओंकोविकसित कर लियाहै। यह शोध इसी'अदृश्य सेतु' कोउजागर करताहै, जोउत्तर कीसंस्कृतनिष्ठ भाषाओंऔर दक्षिण कीप्राचीन द्रविड़भाषाओंकेबीच एक सेतुकानिर्माण करताहै। आर्य, द्रविड़, आग्नेय और तिब्बती-बर्मीभाषापरिवारोंकेबीच कायह संवाद केवल शब्दोंकालेन-देन नहींहै, बल्कियह एक साझा'भारतीय चित्त' कीअभिव्यक्तिहै। सहस्राब्दियोंकेइस भाषाई मंथन नेभारतीय भाषाओंकोएक ऐसीपारस्परिकताप्रदान कीहैजहाँभाषाएँएक-दूसरेकेपूरक केरूप मेंकार्यकरतीहैं। यह नवीन दृष्टिहमेंयह समझनेमेंसहायताकरतीहैकिभारत कीभाषाई विविधताहमारेविखंडन काकारण नहीं,

बल्किहमारीउस सांस्कृतिक सघनताकाप्रमाण हैजिसनेआक्रमणोंऔर राजनीतिक उथल-पुथल केबावजूद भारत कोएक सूत्र मेंपिरोए रखा। शोध कायह हिस्सास्पष्ट करताहैकिभारतीय भाषापरिवार वास्तव मेंएक 'सांस्कृतिक लोकतंत्र' काप्रतीक है, जहाँप्रत्येक बोलीऔर भाषानेअपनीपहचान सुरक्षित रखतेहुए भीएक व्यापक 'भारतीय भाषाई पहचान' केनिर्माण मेंयोगदान दियाहै। अतः, भाषाओंकोखानोंमेंबाँटनेकेबजाय उनकी'पारस्परिकता' पर केंद्रित होनाहीवर्तमान समय कीसबसेबड़ीशोध आवश्यकताहै।

2 व्याकरणिक संरचनाऔर पद-क्रम कीसंरचनात्मक एकात्मताकाविश्लेषण

भाषाकीआत्माउसकेव्याकरण मेंनिहित होतीहैऔर यदिहम गहराई सेविश्लेषण करेंतोपाएंगेकिभारतीय भाषाओंकाव्याकरणिक ढांचाआश्चर्यजनक रूप सेएक समान है, जोउनकेसाझा'संज्ञानात्मक आधार' (Cognitive Base) कोपुष्ट करताहै। भाषावैज्ञानिक दृष्टिसेयह अत्यंत महत्वपूर्णऔर विचारणीय तथ्य हैकिविश्व कीअधिकांश भाषाओंकेविपरीत, भारत कीलगभग समस्त भाषाओंमेंवाक्य-विन्यास काक्रम 'कर्ता-कर्म-क्रिया' (Subject-Object-Verb यानीSOV) केशाश्वत नियम पर आधारित है। जहाँअंग्रेजीऔर अन्य यूरोपीय भाषाओंमेंवाक्य कीसंरचना'SVO' (Subject-Verb-Object) होतीहै(जैसे: "Ram eats a mango"), वहींभारत कीचाहेवह हिंदीहो, तमिल हो, मराठीहो, कन्नड़होयाबांग्ला, विचार अभिव्यक्तिकाबुनियादीढांचाएक जैसाहीरहताहै(जैसे: "राम आम खाताहै" या"रामन मम्पलम्साप्पिडुकिरान")। इस पद-क्रम कीसमानताकाअर्थयह हैकिभारतीय मस्तिष्क सूचनाओंकोएक हीक्रम मेंसंसाधित (Process) करताहै—पहलेकार्यकरनेवाला, फिर वह वस्तुजिस पर कार्यहोरहाहै, और अंत मेंवह क्रियाजोघटित होरहीहै। यह केवल व्याकरण कानियम नहींहै, बल्कियह उस 'भारतीय विचार प्रक्रिया' काप्रतिबिंब हैजोक्रियाकेफल और कर्मकीप्रधानताकोमहत्व देतीहै। इसकेअतिरिक्त, भारतीय भाषाओंमें'परसर्ग' (Postpositions) काप्रयोग भीएक समान है; हम संज्ञाकेबाद कारक चिह्नोंकाप्रयोग करतेहैं(जैसे: 'घर में' या'मेज पर'), जबकिअंग्रेजीमेंयेपहलेआतेहैं('In the house')। इसकेसाथ ही, आदरसूचक सर्वनामोंकीव्यवस्था—जैसे'तू', 'तुम' और 'आप' कासूक्ष्म भेद—संपूर्णभारत कीभाषाओंमेंविद्यमान है, जोसामाजिक मर्यादाऔर रिश्तोंकीगहराई कोव्यक्त करताहै। यह व्याकरणिक साम्य यह सिद्ध करनेकेलिए पर्याप्त हैकिभौगोलिक दूरियोंऔर भाषाई परिवारोंकेवर्गीकरण केबावजूद, भारतीय जनमानस केसोचने, तर्ककरनेऔर भावनाओंकोव्यक्त करनेकाव्याकरणिक आधार एक हीहै। यह संरचनात्मक एकताहीवह 'भाषाई रीढ़' हैजोकश्मीर सेकन्याकुमारीतक केभाषाई

शरीर कोखड़ारखतीहैऔर हमेंयह आभास करातीहैकिहम अलग-अलग भाषाएँबोलतेहुए भीएक हीमानसिक धरातल पर खड़ेहैं।

3 ध्वनि-विज्ञान और वर्णमालाकावैज्ञानिक एवंदार्शनिक आधार

भारतीय वर्णमाला, जिसेहम 'अक्षरा' कहतेहैं, विश्व केभाषाई इतिहास मेंविज्ञान और अध्यात्म केअद्भुत समन्वय काचरमोत्कर्षहै। विश्व कीअन्य प्रचलित लिपियों, जैसेरोमन याअरबीकीतुलनामें, भारतीय भाषाओंकीवर्णमालापूर्णतःवैज्ञानिक, तार्किक और ध्वन्यात्मक (Phonetic) सिद्धांतोंपर आधारित है। 'अ' सेलेकर 'ज्ञ' तक ध्वनियोंकाजोसूक्ष्म और व्यवस्थित वर्गीकरण प्राचीन संस्कृत व्याकरण मेंमिलताहै, वहीवर्गीकरण कमोबेश तेलुगु, कन्नड़, बांग्ला, ओडिया, मराठीऔर मलयालम जैसीसभीप्रमुख भारतीय भाषाओंमेंभीप्राप्त होताहै। यह वर्गीकरण केवल अक्षरोंकीसूचीनहींहै, बल्कियह मानव शरीर केवाक-यंत्र (Vocal Apparatus) काएक सटीक मानचित्र है। वर्णमालाकाप्रत्येक वर्ग—कंठ्य (गलेसे), तालव्य (तालुसे), मूर्धन्य (जीभ कोमोड़कर), दंत्य (दांतोंसे) और ओष्ठ्य (होठोंसे)—ध्वनिविज्ञान केउन नियमोंकापालन करताहैजिन्हेंआधुनिक ध्वनिशास्त्र (Phonology) आज स्वीकार कर रहाहै। उदाहरण केलिए, 'क-वर्ग' से'प-वर्ग' तक कीयात्रावास्तव मेंगलेकीगहराई सेहोठोंकेबाहरीकिनारेतक कीएक वैज्ञानिक यात्राहै। यह ध्वनि-साम्य भारतीय भाषाओंकोएक ही'ध्वन्यात्मक परिवार' कासदस्य सिद्ध करताहै। वर्णमालाकेइस वैज्ञानिक आधार केकारण हीएक भारतीय, चाहेवह किसीभीक्षेत्र काहो, दूसरीभारतीय भाषाकीध्वनियोंकोबहुत कम प्रयास मेंऔर शुद्धताकेसाथ उच्चारित कर सकताहै। इसकेसाथ ही, भारतीय लिपियोंमेंप्रत्येक ध्वनिकेलिए एक विशिष्ट चिह्न (अक्षर) काहोनाइसे'जैसाबोलाजाए वैसाहीलिखाजाए' कीअद्वितीय विशेषताप्रदान करताहै, जोअंग्रेजीजैसीभाषाओंमेंसंभव नहींहै। यह वर्णमालाहमारेसाझा'नाद-ब्रह्म' केदर्शन सेजुड़ीहै, जहाँध्वनिकोब्रह्म कारूप मानागयाहै। अतः, वर्णमालाकीयह वैज्ञानिकताऔर ध्वनि-विज्ञान कीसमानतावह 'अदृश्य सूत्र' हैजोभारतीय भाषाओंकेविविधतापूर्णस्वरूप कोएक सुदृढ़और तार्किक आधार प्रदान करताहै। यह

सिद्ध करताहैकिभारत केप्राचीन मनीषियोंनेभाषाकोकेवल संवाद कामाध्यम नहीं, बल्किध्वनिऔर कंपन केविज्ञान केरूप मेंविकसित कियाथा, जोआज भीहमारीभाषाई एकताकाआधार स्तंभ बनाहुआ है।

4 शब्दावलीकाआदान-प्रदान और तत्सम परंपरा: भाषिक एकात्मताकाआधार

शब्दावलीकिसीभीभाषाकावह जीवंत कोश होतीहैजोउसकेइतिहास, भूगोल और सांस्कृतिक संपर्कोंकीगवाहीदेतीहै। भारतीय भाषाओंकेसंदर्भमेंयह शोध इस तथ्य कोरेखांकित करताहैकिसंस्कृत केवल एक प्राचीन भाषानहीं, बल्किभारतीय भाषाओंकी'धात्री' और निरंतर बहनेवालीविचार-धाराहै। 'तत्सम' (उसकेसमान) शब्दावलीवह सेतुहैजिसनेभारत केभाषाई मोतियोंकोएक अभेद्य मालामेंपिरोयाहै। जब हम 'जल', 'माता', 'धर्म', 'भूमि', 'वायु', 'आकाश', 'आत्मा' और 'सत्य' जैसेशब्दोंकाप्रयोग करतेहैं, तोहम किसीएक क्षेत्रीय सीमामेंनहींबंधेहोते, बल्किहम एक 'अखिल भारतीय शब्द-संपदा' काउपयोग कर रहेहोतेहैं। यह शोध यह स्पष्ट करताहैकिदक्षिण भारत कीभाषाएँ, जिन्हेंअक्सर द्रविड़परिवार काकहकर अलग कर दियाजाताहै, वास्तव मेंसंस्कृत शब्दावलीकीसबसेबड़ीसंरक्षक रहीहैं। उदाहरण केतौर पर, मलयालम और तेलुगुकेशास्त्रीय साहित्य और दैनिक व्यवहार मेंसंस्कृत शब्दोंकाअनुपात 50% सेभीअधिक है। यह केवल शब्दोंकाआयात नहींहै, बल्कियह उन अवधारणाओंकासाझाकरण हैजोभारतीय जीवन-दर्शन कीरीढ़हैं। 'मोक्ष',

'संस्कार' और 'त्याग' जैसेशब्दोंकाजोअर्थतमिल भाषीकेलिए है, वहीअर्थकश्मीरीयाअसमियाभाषीकेलिए भीहै। इसकेसमानांतर, द्रविड़भाषाओंनेभीउत्तर भारत कीभाषाओंको'नीर', 'मीन', 'कुण्डल' और 'माला' जैसेअनेक शब्द देकर समृद्ध कियाहै। यह 'लेक्सिकल एक्सचेंज' (शब्दावलीकाविनिमय) सिद्ध करताहैकिभारतीय भाषाओंकाविकास परस्पर विरोधीदिशाओंमेंनहीं, बल्किएक-दूसरेकेपूरक केरूप मेंहुआ है। तत्सम और तद्भव शब्दोंकीयह विशाल परंपराहमारीभाषिक एकात्मताकासबसेसबल प्रमाण है, जोयह दर्शातीहैकिबाहरीभिन्नताओंकेबावजूद हमारा'सांस्कृतिक शब्दकोश' एक हीहै। यह शब्दावलीकेवल संवाद कामाध्यम नहींहै, बल्कियह उस साझीविरासत कासंवाहक हैजोहमेंएक राष्ट्रकेरूप मेंवैचारिक पहचान प्रदान करतीहै।

5 साहित्यिक चेतनाऔर कथानक कीएकरूपता: साझासांस्कृतिक अंतःकरण

भारतीय साहित्य काइतिहास इस सत्य काउद्घोष करताहैकिभारत कीआत्माएक है, भलेहीवह अनेक भाषाओंमेंस्वयंकोअभिव्यक्त करतीहो। रामायण, महाभारत और अठारह पुराण भारतीय साहित्यिक चेतनाकीवह रीढ़हैं, जिनकेबिनाभारतीय भाषाओंकाअस्तित्व अकल्पनीय है। यह शोध पत्र यह विश्लेषित करताहैकिकिस प्रकार इन महाकाव्योंकेकथानक नेहज़ारोंवर्षोंतक भारतीय भाषाओंकेबीच एक 'अखंड संवाद' कोजीवित रखाहै। आदिकविवाल्मीकिकीरामायण होयाऋषिव्यास कामहाभारत, इन ग्रंथोंनेप्रत्येक भारतीय भाषाकोउसकेसृजन केआरंभिक काल मेंहीआधारभूत कथानक और नैतिक मूल्य प्रदान कर दिए थे। जब हम कंबन कीतमिल रामायण, तुलसीदास कारामचरितमानस, कृतिवास कीबांग्लारामायण, रंगनाथ कीतेलुगुरामायण याएकनाथ कीमराठीभावार्थरामायण कातुलनात्मक अध्ययन करतेहैं, तोहम पातेहैंकिभौगोलिक दूरियोंऔर भाषाई भिन्नताओंकेबावजूद राम केआदर्श, सीताकात्याग और रावण कापराभव—इन सभीरचनाओंकीकेंद्रीय संवेदनाएक हीहै। यह केवल धार्मिक आस्थाकाविषय नहींहै, बल्कियह उस 'साहित्यिक निरंतरता' (Literary Continuity) काप्रमाण हैजिसनेभारत कोएक भावात्मक इकाई बनाए रखा। इन ग्रंथोंकेमाध्यम सेजोबिंब, अलंकार और मुहावरेविकसित हुए, वेसंपूर्णभारत कीसाहित्यिक धरोहर बन गए। भारतीय साहित्यकार चाहेवह दक्षिण काहोयाउत्तर का, वह उन्हींसाझामिथकोंऔर प्रतीकोंकाउपयोग करताहैजोउसेविरासत मेंमिलेहैं। यह कथानक कीएकरूपतासिद्ध करतीहैकिभारतीय भाषाओंकेबीच एक गहरी'साहित्यिक और नैतिक साझीदारी' है, जोकिसीभीराजनीतिक सीमासेअधिक सुदृढ़है। इस प्रकार, साहित्यिक चेतनाकायह प्रवाह भारतीय भाषाओंकोएक हीपरिवार केसदस्योंकेरूप मेंस्थापित करताहै, जहाँप्रत्येक भाषाअपनीमौलिकताकेसाथ उसीसाझाविरासत कोआगेबढ़ातीहै। रामायण और महाभारत हमारेसांस्कृतिक मानचित्र केध्रुव तारेहैं।

"रामायण और महाभारत भारत केदोऐसेमहाप्राण हैं, जिनमेंभारत कीआत्मानिवास करतीहै।" — हजारीप्रसाद द्विवेदी

6 भक्तिआंदोलन: भाषाई सीमाओंकेअतिक्रमण और राष्ट्रीय समन्वय का युग

मध्यकाल मेंभारत केसंतोंऔर कवियोंद्वारासंचालित भक्तिआंदोलन भारतीय इतिहास कावह स्वर्णिम काल था, जिसनेभाषाओंकोमंदिर कीप्राचीर सेनिकालकर जन-जन कीचौपाल तक पहुँचायाऔर भाषाई हीनताकोसमाप्त कर 'लोकभाषा' कोप्रतिष्ठाप्रदान की। इस शोध मेंयह विस्तार सेविश्लेषित कियागयाहैकिकैसेभक्तिसाहित्य नेभाषाई

सीमाओंकोलांघकर एक अखिल भारतीय संवाद और राष्ट्रीय एकीकरण कामार्गप्रशस्त किया। संतोंनेजिस लोकभाषाकाप्रयोग किया, वह केवल संवाद कामाध्यम नहींथी, बल्किवह एक 'सांस्कृतिक सेतु' थी। दक्षिण भारत केआलवार और नयनार संतोंसेप्रारंभ हुई भक्तिकीयह लहर जब उत्तर भारत पहुँची, तोइसनेकबीर, जायसी, सूर और तुलसीजैसेकवियोंकोजन्म दिया। महत्वपूर्णबात यह हैकिइन संतोंकाविचार-धरातल एक हीथा। महाराष्ट्रकेसंत नामदेव कीमराठीवाणीकापंजाब के'गुरु ग्रंथ साहिब' मेंसम्मिलित होना, याराजस्थान कीमीराबाई केभजनोंकागुजरात और बंगाल तक गायाजानाइस बात काप्रमाण हैकिभक्तिभाव नेभाषाओंकोजोड़नेकाकार्यकिया, तोड़नेकानहीं। इन संतोंनेसिद्ध कर दियाकि'परमात्माकासंवाद' संस्कृत कीक्लिष्टताकामोहताज नहींहै, वह जनभाषामेंभीउतनाहीप्रभावीहै। भक्तिकाल केसाहित्य नेसंपूर्णभारत कोएक ऐसे'लिंगुआ फ्रैंका' (Link Language) सेजोड़ दियाजहाँएक मराठीसंत कासंदेश एक कश्मीरीयातमिल भाषीव्यक्तिभीअपनेहृदय सेमहसूस कर सकताथा। इस कालखंड मेंभाषाओंकेबीच जोप्रेम और समन्वय कावातावरण बना, उसनेभारतीय समाज कोएक ऐसीआंतरिक शक्तिप्रदान कीजिसनेविदेशीआक्रमणोंकेबावजूद हमारीसांस्कृतिक पहचान कोसुरक्षित रखा। भक्तिआंदोलन केमाध्यम सेभारतीय भाषाओंनेएक-दूसरेकेमुहावरों, बिंबोंऔर दर्शन कोइस प्रकार आत्मसात कियाकिएक 'साझाभारतीय भक्ति-संस्कृति' काजन्म हुआ, जोआज भीहमारीभाषाई और राष्ट्रीय एकताकासबसेजीवंत दस्तावेज़है।

7 राष्ट्रीय शिक्षानीति(2020) और भारतीय भाषाओंकाभविष्य: पुनरुत्थान और स्वाभिमान

वर्तमान वैश्विक और राष्ट्रीय परिदृश्य में, राष्ट्रीय शिक्षानीति(2020) भारतीय भाषाओंकेइतिहास मेंएक युगपरिवर्तनीय मोड़केरूप मेंउभरीहै, जिसकाउद्देश्य भाषाई उपनिवेशवाद कीबेड़ियोंकोकाटकर 'भाषाई गर्व' (Linguistic Pride) कीपुनर्स्थापनाकरनाहै। लंबेसमय तक भारतीय मानस मेंयह भ्रामक धारणागहराई तक जमीरहीकिआधुनिक ज्ञान, विज्ञान और तकनीक केवल अंग्रेजीजैसीविदेशीभाषाओंमेंहीसंभव है, जिसकेकारण भारतीय भाषाओंकोद्वितीय श्रेणीकीभाषामान लियागया। यह शोध पत्र विश्लेषण करताहैकिएनईपी2020 किस प्रकार इस 'भाषाई हीनभावना' केमनोविज्ञान कोजड़सेसमाप्त करनेकामार्गप्रशस्त करतीहै। नीतिमेंप्राथमिक शिक्षाकोमातृभाषायास्थानीय भाषामेंअनिवार्यबनानेकाप्रावधान न केवल बाल मनोविज्ञान केअनुकूल है, बल्कियह छात्र कीमौलिक सोच और सृजनात्मकताकोभीनयाआयाम प्रदान करताहै। जब एक बालक अपनीहीभाषामेंअवधारणाओंकोसमझताहै, तोउसकी'लर्निंग आउटकम' (सीखनेकीक्षमता) कई गुनाबढ़जातीहै। इसकेसाथ ही, यह नीतिभारतीय भाषाओंकोकेवल साहित्य यालोक-कलातक सीमित न रखकर उन्हेंमेडिकल, इंजीनियरिंग और कानून जैसेउच्च शिक्षाकेक्षेत्रोंमेंलानेकाजोविज़न प्रस्तुत करतीहै, वह 'ज्ञान-आधारित समाज' केनिर्माण केलिए क्रांतिकारीहै। यह नीति'एक भारत श्रेष्ठ भारत' केसंकल्प केतहत विभिन्न भारतीय भाषाओंकेबीच अनुवाद, डिजिटल कंटेंट और त्रिभाषासूत्र केलचीलेक्रियान्वयन पर बल देतीहै, जिससेएक भाषाई क्षेत्र काव्यक्तिदूसरेभाषाई क्षेत्र कीगरिमाकोसमझ सके। यह विमर्शस्थापित करताहैकिएनईपी2020 केवल एक प्रशासनिक दस्तावेज नहींहै, बल्कियह भारतीय भाषाओंकोउनकेखोए हुए गौरव कोवापस दिलानेऔर उन्हें21वींसदीकीचुनौतियोंकेअनुरूप 'ज्ञान कीभाषा' (Language of Knowledge) बनानेकामहायज्ञ है। इसकेसफल क्रियान्वयन सेआनेवालीपीढ़ीन केवल बहुभाषीहोगी, बल्किवह अपनीसांस्कृतिक जड़ोंसेजुड़कर वैश्विक स्तर पर आत्मविश्वास केसाथ अपनीपहचान स्थापित कर सकेगी।

eISBN: 978-81-686924-4-2

7.1 लोक-साहित्य: मिट्टीकीमहक

लोकगीतोंमेंजोएकताहै, वह अद्भुत है। कश्मीरीलल्लेश्वरीहोयालद्दाख केलोकगीत, सबकास्वर एक हीहै: "पहाड़ोंकीढलानोंसेजोगीत उतरतेहैं, वहीसागर कीलहरोंपर आकर संवरतेहैं। मिट्टीकीगंध तोहर भाषामेंसमाई है, येलोक-संस्कृतिहीहमारीअसलीकमाई है।"

8 अनुवाद: संस्कृतिकामिलन

अनुवाद पर रवींद्रनाथ टैगोर नेकहाथा, "अनुवाद केवल एक भाषासेदूसरीभाषामेंयात्रानहींहै, बल्किएक हृदय सेदूसरेहृदय मेंप्रवेश है।" भारतीय भाषाओंमेंअनुवाद इसलिए सहज हैक्योंकिहमारेमुहावरेऔर संवेदनाएँसाझाहैं।

उपसंहार और निष्कर्ष:

यह शोध पत्र अंततःयह प्रतिपादित करताहैकिभारत कीभाषाई विविधताहमारेविखंडन काकारण नहीं, बल्किहमारेउस 'अखंड अस्तित्व' कासौंदर्यहैजिसनेहमेंहज़ारोंवर्षोंसेएक बनाए रखाहै। व्याकरणिक संरचना, ध्वनि-विज्ञान, साझाशब्दावली, साहित्यिक चेतनाऔर भक्तिकाल केसमन्वय सेलेकर आधुनिक शिक्षानीतितक, प्रत्येक बिंदुइस बात कीपुष्टिकरताहैकिभारतीय भाषाएँएक हीमहावृक्ष कीविभिन्न शाखाएँहैं। हमारीभाषाओंकीयह 'आंतरिक एकता' हीवह शक्तिहैजोहमेंएक राष्ट्रकेरूप मेंजीवंत रखतीहै।

निष्कर्षत:, भारत कीभाषाएँएक विशाल ऑर्केस्ट्राहैं। "विविध राग हैं, विविध सुर हैं, पर संगीत तोएक है, विविध पुष्प हैं, विविध रंग हैं, पर सुगंध तोएक है। भारत कीहर ज़बां, गौरव कीअमर कहानीहै, विविधतामेंएकताही, हमारीअसलीनिशानीहै।"

संदर्भसूची

डॉ. रामविलास शर्मा– (ग्रंथ: भारतीय भाषापरिवार और हिंदी)

डॉ. भोलानाथ तिवारी– (ग्रंथ: भाषाविज्ञान)

डॉ. हरदेव बाहरी– (ग्रंथ: हिंदीउद्भव और विकास)

आचार्यहज़ारीप्रसाद द्विवेदी– (ग्रंथ: हिंदीसाहित्य कीभूमिका)

डॉ. सुनीतिकुमार चटर्जी– (ग्रंथ: भारतीय आर्यभाषाऔर हिंदी)

एम. बी. एमिनो**(M. B. Emeneau)** – (शोध-पत्र: *India as a Linguistic Area*)

जॉर्जअब्राहम ग्रियर्सन **(George A. Grierson)** – (ग्रंथ: *Linguistic Survey of India*)

डॉ. नागेंद्र – (ग्रंथ: भारतीय साहित्य काइतिहास)

महात्मागांधी– (भाषाई विचार एवंहिंद स्वराज)

YOUR DISSERTATION DESERVES RECOGNITION, NOT A PLACE IN A STOREROOM

Publish Your Dissertation as a Book through the Emerging Scholars Series

Transform your thesis or dissertation into a professionally published scholarly work, boosting its academic visibility and impact.

Benefits

- 📚 ISBN Registration*
- 🆔 Crossref DOI Assignment
- 🟢 ORCID Integration
- 🎓 Google Scholar Discoverability
- 📈 Enhanced Citation Opportunities
- 🌍 Wider Academic Reach and Recognition
- 🔒 Long-Term Preservation and Accessibility

Publication Options

Jnanasetu Repository	Jnanasetu Repository Publication with an ISBN
✓ Crossref DOI Assignment ✓ Online Archiving and Preservation ✓ Academic Visibility ✓ Citations	✓ ISBN Registration ✓ Crossref DOI Assignment ✓ Professional Book Publication ✓ Global Accessibility ✓ Academic Visibility ✓ Citations

Looking to Publish Research Articles?

Researchers and scholars may also submit manuscripts to **Jnanasetu Journals** for quality-focused scholarly publication.

- ✓ Peer-Reviewed Journals
- ✓ DOI Assignment
- ✓ Open Access Publishing
- ✓ Academic Visibility
- ✓ Timely Editorial Processing

We Also Publish

- 📖 Edited Books
- 📚 Scholarly Monographs
- 📝 Conference Proceedings
- 🔬 Academic Journals

For more details:

Press	jnanasetupress.com	support@jnanasetupress.com
Repository	jnanaseturepository.com	editor@jnanaseturepository.com
Journals	jnanasetujournals.com	editor@jnanasetujournals.com